हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 06

घनानंद की काव्य - भाषा

घनानंद की दृष्टि में काव्य-कला में भाषा उपेक्षणीय तत्व नहीं है। उसका बड़ा महत्व है। कवि कहता है कि हृदय को छलने का साधन भी अक्षर ही है और उसे तृप्त करने का साधन भी वही है। यद्यपि सत्य अक्षर से दूर है, पर अक्षर ही उसका परिचय कराता है। भाव-मग्न होकर अक्षर की गति जानने पर तत्व का बोध हो जाता है।

अच्छरें मन को हरैं बहुरि अच्छर ही भावें
रूप अच्छरातीत ताहि अच्छरैं बतावैं
तत्व बोध बौरानि में अच्छर गति अच्छर लहैं।

घनानंद की दृष्टि में शब्द वक्ता के सूक्ष्म श्वास-प्रश्वासों का ही पवन पट है जो अनुराग के रंग में रंगा रहता है। बहरहाल इससे स्पष्ट है कि घनानंद का काव्य भाषा के प्रति बेहद सतर्क तथा संवेदनशील व सृजनात्मक थे।

घनानंद के भावों के समान ही उनकी भाषा में भी नवीनता है। उनकी भाषा टकसाली ब्रजभाषा है। ब्रजभाषा के सबसे स्वच्छ, परिमार्जित तथा प्रवाहपूर्ण रूप का प्रयोग केवल रसखान और घनानंद ही कर सके। इनमें घनानंद की भाषा में लाक्षणिक वैचित्र्य और व्यंजना का सौन्दर्य रसखान की

अपेक्षा अधिक है। घनानंद ने लक्षणा शक्ति के द्वारा विरोध-वृत्ति से उभारकर भाषा का सौन्दर्य कई गुणा बढ़ा दिया है। इसी प्रकार इनमें मानवीकरण का प्रयास भी पग-पग पर दीख पड़ता है। इस दृष्टि से उनकी तुलना आधुनिक काल के छायावादी कवियों से की जा सकती है।

घनानंद की भाषा में माधुर्य अप्रतिम है। उनकी रचनाओं में कर्ण-कटु वर्णों का प्रयोग बरस्तु नहीं मिलेगा। एक ओर वे लोक जीवन के व्यंजक शब्दों का प्रयोग कर अनोखी दीप्ति पैदा करते हैं दूसरी ओर फारसी के विद्वान होते हुए भी वे अपनी भाषा को फारसी बोझिल नहीं होने देते। उन्होंने मुहावरों और कहावतों के योग से भाषा की व्यंजकता बढ़ा दी है। मुहावरों के प्रयोग की पद्धति निश्चय ही फारसी की प्रेरणा से ग्रहण की है पर फारसी के मुहावरों की योजना नहीं की, जैसा उर्दू वालों ने किया।

घनानंद की काव्य-भाषा में व्याकरण व्यवस्था का संघटन पूर्ण रूप से विद्यमान है बिहारी की भाषा भी व्यवस्थित तथा साहित्यिक है, पर घनानंद जैसी सजीव और लाक्षणिक नहीं है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कहना सोलहों आने ठीक है कि बिहारी और घनानंद को मिलाकर ब्रज भाषा का सच्चा व्याकरण तैयार किया जा सकता है।

भाषा की समृद्धि के जितने भी उपादान होते हैं वे सब घनानंद की काव्य भाषा में उपलब्ध है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ठीक ही लिखा है कि भाषा के विचार से तो रीतिबद्ध कवियों में से बहुत कम उनकी तुलना में टिक सकेंगे। अतः घनानंद की कविता के भाव पक्ष और कलापक्ष के विवेचन के पश्चात कहा जा सकता है कि रीतिकाल के राजसी परिवेश में प्रश्रय पाकर भी उन्होंने अपनी कविता को सामंती विलास की बांदी नहीं बनने दिया।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (सहायक प्राध्यापक)
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं०- 8292271041
ईमेल - benamkumar213@gmail.com

दिनांक
07/11/2020